ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-6* Issue-9* October- 2021
Innovation The Research Concept

माध्यमिक विद्यालयों में लैंगिक संवेदनशीलता-वस्तुस्थिति एवं विकास के प्रयासों का अध्ययन

A Study of Gender Sensitivity, Status and Development Efforts in Secondary Schools

Paper Submission: 15/10/2021, Date of Acceptance: 24/10/2021, Date of Publication: 25/10//2021

हनुमान सहाय शर्मा
शोधार्थी
शिक्षा शास्त्र विभाग,
गोविन्द गुरू जनजातीय विश्वविद्यालय, बांसवाडा
राजस्थान, भारत

मधु उपाध्याय
प्राचार्या,
महात्मा गाँधी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय,
बांसवाडा, राजस्थान,
भारत

सारांश

स्त्री और पुरूष का लिंग सम्बन्धी अन्तर केवल शारीरिक है, जिसे बदलना प्रायः सम्भव नहीं है। जो मानव सभ्यता के विकास हेतु आवश्यक भी है। यह अन्तर भेदभाव का नहीं बल्कि विशिष्टता का सूचक होना चाहिए था। लेकिन ऐसा नहीं हो पाया। वैदिक युग में भारतीय समाज में स्त्रियों व पुरूषों को विकास के लिए समान अवसर उपलब्ध थे, लेकिन कालांतर में इसमें असमानता प्रकट होने लगी। प्रस्तुत शोध कार्य के उद्देश्य माध्यमिक विद्यालयों में लैंगिक संवेदनशीलता-वस्तुस्थिति एवं विकास के प्रयासों का अध्ययन करना है। प्रस्तुत शोध कार्य में 320 विद्यार्थियों एवं 160 शिक्षकों को यादृच्छिक विधि से चयन किया गया। दत्त संकलन हेतु स्वनिर्मित उपकरण विद्यार्थी लैंगिक संवेदनशीलता वस्तुस्थिति मापनी एवं शिक्षकों द्वारा लैंगिक संवेदनशीलता के विकास के प्रयास हेतु साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया। दत्तों के विश्लेषण हेतु शून्य परिकल्पनाओं का निर्माण कर टी-परीक्षण सांख्यिकी का प्रयोग कर निष्कर्ष प्राप्त किये गये हैं। निष्कर्ष में पाया कि माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की लैंगिक संवेदनशीलता की वस्तुस्थिति में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों द्वारा किये जाने वाले लैंगिक संवेदनशीलता के विकास के प्रयासों में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

The gender difference between man and woman is only physical, which is often not possible to change. Which is also necessary for the development of human civilization. This difference should not have been a sign of discrimination but a sign of uniqueness. But this could not happen. Equal opportunities for development were available to men and women in the Indian society in the Vedic age.

But over time, inequality began to appear in it. The purpose of the present research work is to study gender sensitivity-status and development efforts in secondary schools. In the present research work, 320 students and 160 teachers were selected randomly.

Self-made tool for data collection, student gender sensitivity situation measurement and interview schedule was used for the efforts of teachers to develop gender sensitivity. Conclusions have been obtained using t-test statistics by constructing null hypotheses for data analysis.

The findings found that there was no significant difference in the status of gender sensitivity of secondary school students. No significant difference was found in the efforts made by secondary school teachers to develop gender sensitivity.

मुख्य शब्दः लैंगिक संवेदनशीलता, विकास, माध्यमिक विद्यालयों में लैंगिक ।

प्रस्तावना

मानव ईश्वर द्वारा रचित सर्वोत्कृष्ट कृति है। बुद्धि एवं विचारशीलता मानव की ऐसी दो विशिष्टताएँ है, जिसके आधार पर मानव सम्पूर्ण प्राणी जगत का संचालक माना जाता है। ये विशिष्टताएँ मानव को अन्य दो जीवधारियों जन्तु एवं वनस्पति जगत से प्रधानता एवं पृथकता दिलवाती है। जीव-जन्तु एवं वनस्पति तो मानवीय उपभोग एवं उपयोग के संसाधन भर रह गये हैं।

प्राणी जगत के इन तीनों वर्गों में इनकी संरचना के आधार पर काफी विभेद पाया जाता है। जहाँ मानव एवं पशु-पक्षियों में नर एवं मादा समान अनुपात में पाये जाते हैं। वहीं वनस्पति एवं पादप जगत में ऐसा पार्थक्य नहीं पाया जाता है। जीवधारियों में पाया जाने वाला यही अन्तर लिंग विभेद कहलाता है। जिसका निर्धारण उनकी शारीरिक संरचना द्वारा किया जाता है। इस प्रकार लिंग समस्त जीवधारियों को दो भागों में विभाजित करता है, जिसमें प्रत्येक की अपनी कुछ विशेषताएं होती है।

स्त्री और पुरूष का लिंग सम्बन्धी अन्तर केवल शारीरिक है, जिसे बदलना प्रायः सम्भव नहीं है। जो मानव सभ्यता के विकास हेतु आवश्यक भी है। यह अन्तर भेदभाव का नहीं बल्कि

विशिष्टता का सूचक होना चाहिए था। लेकिन ऐसा नहीं हो पाया। वैदिक युग में भारतीय समाज में स्त्रियों व पुरूषों को विकास के लिए समान अवसर उपलब्ध थे, लेकिन कालांतर में इसमें असमानता प्रकट होने लगी।

समय के साथ भारतीय समाज में हुए कई प्रकार के परिवर्तनों के कारण विभिन्न सामाजिक समस्याओं का जन्म हुआ। जिसमें प्रमुख छुआ-छूत, नशीले पदार्थों का सेवन, लैंगिक पक्षपात, कन्या भ्रूण हत्या, बाल-विवाह, पर्दा प्रथा, दहेज प्रथा, कन्या वध, घरेलू हिंसा आदि। इनमें अधिकांश समस्याओं की जड़ लैंगिक भेदभाव, असमानता से सम्बन्धित है।

अध्ययन का औचित्य

समाज में परम्परागत रूप से महिलाओं को कमजोर जाति वर्ग के रूप में माना जाता है। वह पुरूषों की एक अधीनस्थ स्थिति में होती है। वो घर और समाज दोनों में शोषित, अपमानित, अक्रमित और भेदभाव से पीड़ित होती है। महिलाओं के खिलाफ भेदभाव का ये अजीब प्रकार दुनियाँ में हर जगह प्रचलित है और भारतीय समाज में तो बहुत अधिक है। भारतीय समाज में लिंग असमानता का मूल कारण इसकी पितृसत्तात्मक व्यवस्था में निहित है।

प्रसिद्ध समाजशास्त्री सिल्विया वाल्बे के अनुसार, "पितृ सत्तात्मकता सामाजिक संरचना की ऐसी प्रक्रिया और व्यवस्था है जिसमें आदमी औरत पर अपना प्रभुत्व जमाता है। उसका दमन करता है और उसका शोषण करता है।" महिलाओं का शोषण भारतीय समाज की सदियों पुरानी सांस्कृतिक घटना है। प्राचीन भारतीय हिन्दू कानून के निर्माता मनु के अनुसार, "ऐसा माना जाता है कि औरत को अपने बाल्यकाल में पिता के अधीन, शादी के बाद पति के अधीन और अपनी वृद्धावस्था में या विधवा होने के बाद अपने पुत्र के अधीन रहना चाहिए। किसी भी परिस्थिति में उसे स्वयं स्वतंत्र रहने की अनुमति नहीं है।" मनु द्वारा वर्णित यही स्थिति आज के आधुनिक समाज की संरचना में भी मान्य प्रतीत होती है।

माध्यमिक स्तर के बालक-बालिकाओं के किशोरवय होने के कारण उनमें तर्क, चिन्तन-मनन की क्षमता होती है और इसी अवस्था में बालक-बालिकाओं का झुकाव सामाजिक कार्यों की ओर प्रवृत्त रहता है। वे लिंग विभेद के आधार पर किसी विशेष भूमिका में बंधकर नहीं रहना चाहते बल्कि लिंग विभेद को तोड़कर हर प्रकार की सामाजिक, सांस्कृतिक भूमिका का निर्वहन उत्साह के साथ करना चाहते हैं। इस कारण आवश्यकता है कि माध्यमिक स्तर की शिक्षा के दौरान ही बालक-बालिकाओं में लैंगिक संवेदनशीलता के विकास हेतु प्रयास किये जायें।

इसलिए माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में लैंगिक संवेदनशीलता की वस्तुस्थिति एवं शिक्षकों द्वारा लैंगिक संवेदनशीलता के विकास हेतु किये जाने वाले प्रयासों का अध्ययन करना समयसामयिक एवं औचित्यपूर्ण है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की लैंगिक संवेदनशीलता की वस्तुस्थिति का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों द्वारा किये जाने वाले लैंगिक संवेदनशीलता के विकास के प्रयासों का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ

1. माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की लैंगिक संवेदनशीलता की वस्तुस्थिति में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
2. माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों द्वारा किये जाने वाले लैंगिक संवेदनशीलता के विकास के प्रयासों में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

अध्ययन विधि

प्रस्तुत अध्ययन कार्य में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन का न्यादर्श

शोधकर्ता ने दौसा जिले के माध्यमिक स्तर के राजकीय एवं निजी विद्यालयों में अध्ययनरत 320 विद्यार्थियों एवं 160 शिक्षकों का चयन यादृच्छिक विधि से किया गया है।

शोध के उपकरण

प्रस्तुत शोध में स्वनिर्मित उपकरणों का प्रयोग किया गया है-

1. विद्यार्थियों में लैंगिक संवेदनशीलता की वस्तुस्थिति जानने हेतु- विद्यार्थी लैंगिक संवेदनशीलता वस्तुस्थिति मापनी स्वनिर्मित प्रश्नावली।
2. शिक्षकों द्वारा लैंगिक संवेदनशीलता के विकास के प्रयासों का अध्ययन करने हेतु- स्वनिर्मित साक्षात्कार अनूसूची।

अध्ययन की सांख्यिकी

प्रस्तुत शोध कार्य में निम्न सांख्यिकी का प्रयोग किया गया है-

1. मध्यमान
2. मानक विचलन
3. टी-परीक्षण

आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

परिकल्पना-1 माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की लैंगिक संवेदनशीलता की वस्तुस्थिति में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

तालिका संख्या-1

समूह (Group)	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	टी–मान (t)	सार्थक अन्तर 0.05=0.01	निष्कर्ष
छात्र	160	53.98	9.88	0.40	0.05=1.97	स्वीकृत
छात्राएँ	160	54.42	9.84		0.01=2.59	स्वीकृत

(df = N1+N2-2) = 160+160-2 = 318

तालिका संख्या-1 मेंमाध्यमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओंके लगिंगिक संवदेनशीलता की वस्तस्थिु स्थिति से सम्बन्धित आंकड़ें दिये गये हैं तालिका के अवलोकन से ज्ञात होता है कि स्वतंत्रता के अंश 318 पर टी-मान 0.40 प्राप्त हुआ। जो 0.05 एवं 0.01 स्तर पर सार्थक टी मान से कम है। अतः परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना-2

माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों द्वारा किये जाने वाले लैंगिक संवेदनशीलता के विकास के प्रयासों में सार्थक अन्तर नहीं पाया
जाता है।

तालिका संख्या-2

समूह (Group)	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	टी–मान (t)	सार्थक अन्तर 0.05=0.01	निष्कर्ष
पुरूष शिक्षक	80	30.96	2.64	1.88	0.05=1.97	स्वीकृत
महिला शिक्षक	80	31.71	2.36		0.01=2.60	स्वीकृत

(df = N1+N2-2) = 80+80-2 = 158

तालिका संख्या-2 में माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों द्वारा किये जाने वाले लैंगिक संवेदनशीलता के विकास के प्रयासों से सम्बन्धित आंकड़ें दिये गये हैं तालिका के अवलोकन से ज्ञात होता है कि स्वतंत्रता के अंश 158 पर टी-मान 1.88 प्राप्त हुआ। जो 0.05 एवं 0.01 स्तर पर सार्थक टी मान से कम है। अतः परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष

1. माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की लैंगिक संवेदनशीलता की वस्तुस्थिति में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
2. माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों द्वारा किये जाने वाले लैंगिक संवेदनशीलता के विकास के प्रयासों में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
3. उपरोक्त अध्ययन के निष्कर्षों से पता चलता है कि माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों (छात्र एवं छात्राओं) की लैंगिक संवेदनशीलता की वस्तुस्थिति समान है अर्थात् छात्र एवं छात्राएं दोनों लैंगिक संवेदनशीलता के प्रति समान विचार रखते हैं। इसी प्रकार माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों द्वारा किये जाने वाले लैंगिक संवेदनशीलता के विकास के प्रयास समान है अर्थात् पुरूष एवं महिला शिक्षक दोनों द्वारा लैंगिक संवेदनशीलता के विकास के प्रयास समान रूप से किये जा रहे हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *जैन, बी. एम. (1972): "शोध प्रविधि एवं क्षेत्रीय तकनीकी", विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा।*
2. *कौशिक, आशा (2004): "नारी सशक्तिकरण, विमर्श और यथार्थ", पाइण्टर पब्लिकेशनस, जयपुर।*
3. *लवनियां, एम. एम. (1989): "भारत में सामाजिक समस्याये", कॉलेज बुक डिपों, जयपुर।*
4. *पाण्डेय, बृज कुमार (2005): "मानवाधिकार और महिलाएं", समय मांजरा राष्ट्र भाषा प्रचार समिति, जयपुर, अंक-59*
5. *www.education.nic.in*
6. *www. Women's Education in India*